हिंदी साहित्य

विविध विमर्श

सम्पादक
डॉ. राजेश शर्मा
डॉ. नरेश सिहाग

अनुक्रम

	शुभकामना सन्देश	v
	शुभाशीष	vii
	संपादकीय	ix
1.	नैतिक शिक्षा विमर्श **डॉ. राजेश शर्मा**	13
2.	21वीं सदी की हिन्दी कविता में दलित विमर्श **डॉ. नरेश कुमार सिहाग**	17
3.	कहानी- गुन्नो की सहेलियाँ **वैशाली कटारिया**	20
4.	कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' में भावनात्मक स्वरूप **श्रवण कुमार चिहार**	24
5.	जीरो से हीरो और हीरो से एंटी हीरो **डॉ. सुमा. एस**	29
6.	हिन्दी मध्यकालीन संतकाव्य पर नव-विमर्श **राज कुमार सेन**	34
7.	जम्मू कश्मीर और आधुनिक राष्ट्रवाद के मायने **शाजिया बशीर**	36
8.	इंजी. आशा शर्मा की बाल-कविताओं में मनोरंजन एवं शिक्षा **संजय कुमार**	42
9.	समय सरगम : जीवन के सांध्यबेला का राग **फरीदा खातुन**	47
10.	समाज विमर्श के संदर्भ में समकालीन मलयालम और हिन्दी कविता - एक अध्ययन **महेश एस.**	53
11.	हिंदी प्रचार में जनसंचार **पूजा शर्मा**	60
12.	खेल खिलौनों का : शिक्षा एवं समाज विमर्श	64

समय सरगम : जीवन के सांध्यबेला का राग

फरीदा खातुन
शोध छात्रा
विश्वभारती शांतिनिकेतन

साहित्य के संदर्भ में विमर्शमूलक चिंतन की संकल्पना आधुनिक काल की देन है। विमर्श ही समकालीन उपन्यासों की शक्ति है। हिंदी गद्य साहित्य में चेतना संपन्न विमर्शमूलक उपन्यासों की रचना हुई है, जिसमें कृष्णा सोबती का नाम प्रसिद्ध है। इनके साहित्य में जीवन की सच्चाई है। भारतीय साहित्य के परिदृश्य पर हिंदी के विश्वसनीय उपस्थिति के साथ वह अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुधरी रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने नौ उपन्यासों की रचना की हैं, इनमें 'समय सरगमश वर्ष 2000 में प्रकाशित हुआ। कृष्णा सोबती की यह विशेषता है कि वह हर बार एक नया विषय और भाषिक मिजाज लेकर आती हैं। भूमंडलीकरण ने हमारे सामाजिक व्यवस्था को बूरी तरह हिला दिया। नई आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था ने परंपरागत परिवार के संयुक्त ढाँचे को तोड़ दिया। खुलाए सहन भरा-पूरा पारिवारिक माहौल सिमटकर आत्मकेंद्रित फ्लैट में तब्दील हो गया। ऐसे में पुरानी और नई पीढ़ी के बीच जीवन मूल्यों को लेकर टकराहट उत्पन्न हुई और परिणामतरू उनके बीच की खाई चौड़ी होती गई। परंपरागत संस्कारों में ढली बहू की जगह कामकाजी महिला ने ले ली। ऐसे में बुजुर्गों और बच्चों की देखभाल कौन करे? नतीजन 'वृद्धाश्रमश और 'चाइल्ड केयर सेंटरश की स्थापना हुई। कह सकते हैं कि भूमंडलीकरण के फलस्वरूप नई आर्थिक व्यवस्था ने वृद्ध विमर्श को जन्म दिया है। कृष्णा सोबती ने ष्समय सरगमश में बदली हुई इसी जीवनधारा को गीतात्मक ऊर्जावान लय में प्रस्तुत किया है। साथ ही जीवन के सांध्य बेला में स्त्री-पुरुष के संबंधों का एक नए रूप में मूल्यांकन किया है। जीवन के इस दौर में जब यौवनाकर्षण (देहाकर्षण) का खिंचाव नहीं रहता, फिर भी दो विश्रांत पथिक मित्रभाव से एक-दूसरे की मदद करते हैं। लेखिका ने मित्रता के इस भाव में 'सांध्यसाथीश की अवधारणा को स्पष्ट किया है। कृष्णा सोबती ने इस उपन्यास में पुरानी और नई

सदी के दो छोरों को समेटने का प्रयास किया है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत की बुजुर्ग पीढ़ियों का एक साथ नया-पुराना प्रत्याखान है दृ 'समय सरगमश। संयुक्त परिवार के भीतर और बाहर वरिष्ठ नागरिकों के प्रति उपेक्षा और उदासीनता की समस्या को लेखिका ने बड़ी ही गहन दृष्टि से सोच-विचार किया है। साथ ही ऐसे बुजुर्ग पीढ़ी पर केवल आत्मदया दिखा आँसू न बहा इन्हें जीवन के नए अर्थ तलाशने की राह भी दिखाई है।

'समय सरगम' के सभी पात्र जीवन के अंतिम दौर से गुजर रहे हैं। इस उपन्यास की नायिका 'आरण्याश अकेली औरत है जो पेशे से लेखिका है। जिजीविषा से भरपूर आरण्या केवल खुद ही नहीं जिए जा रही बल्कि दूसरों को भी नई दृष्टि देती है। उपन्यास के दूसरे प्रमुख पात्र या नायक के रूप में 'ईशानश है जो परंपरागत ढाँचे में ढ़ले विधुर बुजुर्ग है। आरण्या और ईशान एक ही एपार्टमेंट के अलग-अलग फ्लैट में रहते हुए एक-दूसरे के अच्छे मित्र हैं। ईशान और आरण्या दो विपरीत ध्रुव हैं। दोनों की जीवन-दृष्टि अलग -- फिर भी दोनों एक-दूसरे के साथ जीवन के उतरार्द्ध में मित्र भाव से एक-दूसरे के साथ खड़े हैं। उपन्यास में आरण्या जीवन के अंतिम पड़ाव पर खड़ी ऐसी स्त्री है जो नाती-पोते के गुंजार से अलग एकाकी जीवन को जी रही है पर अकेलेपन की व्यथा से कहीं भी पीडिघ्त नहीं है। मृत्यु भय को भुलाकर जीवन के प्रति गहरी आस्था लिए हुए जिए जा रही है— पूरी कर्मठता के साथ। वह परंपरा को चुनौती देती है। उसका मानना है कि पारिवारिक संबंध से अलग रहकर भी व्यक्तित्व का उचित विकास कर सामाजिक जीवन को गतिशील रखा जा सकता है। ईशन परंपरागत ढाँचे में ढले गृहस्थ हैं। तमाम दबावों एवं कष्ट के बावजूद भी वह परिवार को एक मूल्यवान संगठन मानते हैं। आरण्या ठीक इनके विपरीत परिवार के बाजारीकरण संस्था में बदलने से संशंकित है। वह कहती है – "यह भी एक पूरा पुराण है। संयुक्त परिवारों में भी परिवार का स्वामित्व व्यक्ति की उत्पादक हेसियत से जुड़ा है।"[1]

वह आगे कहती है –"परिवार की साँझी श्री संपदा और संपन्नता में निहित है। आप इस साँझेपन के हिस्सेदार हैं तो स्नेह, ममता भी प्रचुर होगी। नहीं तो . .. ।"[2]

ईशान आरण्या की जीवन दृष्टि भले ही एक-दूसरे के विपरीत है पर यह कहीं भी उनमें अंतर्विरोध पैदा नहीं करता। कृष्णा सोबती ने बड़े ही गंभीर दृष्टि से वृद्ध समाज की समस्या को परखने का प्रयास किया है। आरण्या और ईशान के अलावा कामिनी, दमयंती, प्रभुदयाल जैसे पात्रों की दृष्टि कर कई कोणों से इस समस्या को परखा है।

दमयंती ईशान की दोस्त है। पति की मृत्यु के बाद अध्यात्म में अपना वक्त

बिताती है। जवानी के दिनों में काफी आकर्षक और चुलबुली। ओढ़ने-पहनने से लेकर खाने-पीने सभी में एक सलीका। पति की मृत्यु के बाद अपने परिवार में उपेक्षित और एकाकी होती जा रही है। आरण्या से मिलकर वह अपना दुख प्रकट करती है –"मैं तुम्हारी तरह अकेली होती तो क्यों परेशान होती। बच्चे साथ रह रहे हैं। मेरे घर में मेरा कीचन चल रहा है। खर्चा मैं कर रही हूँ। और मैं अपने कमरे में अकेली पड़ी रहती हूँ।"[3]

पति की मृत्यु के बाद जीवन की सांध्य बेला में एक विधवा स्त्री को दुगुना दुख झेलना पड़ता है। आर्थिक निर्भरता और एकाकीपन उसकी बढ़ती उम्र के दुख को और गंभीर बना देता है। दमयंती ऐसी ही वरिष्ठ उम्र की स्त्री है जो पति के मरने पर परिवार में उपेक्षित और अपमानित होती है। वह कहती है –"मेरी सब पुरानी चीजें मौजूद हैं। सिर्फ मैं अपनी जगह पर नहीं हूँ। एक के जाने से देखते-देखते इतना बड़ा फर्क।"[4]

आरण्या के माध्यम से लेखिका ने स्त्री पराधीनता का सशक्त विरोध किया है। उनका मानना है कि अपनी सुरक्षा का भार पिता, पति या पुत्र को न सौंपकर स्वयं अपने कंधों पर डालना होगा। वरना पराधीनता की यह बेड़ी कभी काटी नहीं जा सकती। आरण्या दमयंती को जैसे गुरुमंत्र देती है –"संयम से काम लीजिए। बच्चों के पिता के बाद आपकी सुरक्षा का भार स्वयं आप पर है। एतराज करने का अधिकार भी आपको है।"[5]

आरण्या के माध्यम से स्वयं लेखिका स्त्री का एक नए रूप में आंकलन करती है— वह केवल आँखों में आँसू लिए त्याग एवं ममता की मूरत नहीं है बल्कि उसका अपना विकसित व्यक्तित्व है—

"ममता!"

माँ सिर्फ ममता ही है क्या!

क्या उसके अस्तित्व और व्यक्तित्व के सूत्र अब भी पिता, पति और पुत्र के हाथ में है।"[6]

हाँ, सुरक्षा का भार स्वयं के हाथों में लेना भी एक चुनौती है। आरण्या यात्रा को अकेले लौटती है। रास्ते में उसका पर्स छीन जाता है। पर आरण्या हताश नहीं होती –"तालियाँ छीन ली जाती हैं। गुम हो जाती हैं। फिर कहीं न कहीं मिल भी जाती है।"[7]

उपन्यास के अन्य दो बुजुर्ग पात्र कामिनी ओर प्रभुदयाल हैं। कामिनी अविवाहिता कामकाजी महिला है। आर्थिक रूप से संपन्न। उसके भाई-भाभी की नजर उसकी दौलत पर है। वह दवाओं के नाम पर उसे नींद की दवा देते हैं। उसके घर का सौदा करना चाहते हैं। कामिनी उनके साजिश को समझकर भयभीत हो जाती

है। लेखिका का सवाल है –"पेंशन अर्जित किए हुए अकेली कामिनी की यह हालत क्यों?"[8]

और शायद स्वयं उत्तर भी देती है –"व्यक्तित्व सिर्फ सुविधाओं से नहीं पनपता। वह बनता है समझ और अनुभव से।"[9]

प्रभुदयाल आर्थिक रूप से संपन्न विधुर व्यापारी है। जीवन के इस अंतिम पड़ाव में परिवार से खिन्न होकर अपना अलग जीवन तलाशना चाहते हैं। पर उनके अपने ही पुत्र दौलत की लालच में पहले तो उन्हें डराते-धमकाते हैं और बाद में उन्हें जान से मार डालते हैं।

लेखिका ने आज के बदलते भारतीय परिदृश्य में उत्तर-आधुनिक काल में विकसित होने वाले संभावनाओं को भी पहचाना है। आरण्या और ईशान जीवन की इस सांध्य बेला में मित्र बनकर एक-दूसरे के साथ बढ़ते हैं।

अतीत और भविष्य के बोझ को परे हटा अदम्य जिजीविषा से जिए जा रहे हैं। लेखिका का मानना है कि स्त्री और पुरुष का संबंध आश्रयदाता और आश्रयी का नहीं बल्कि एक-दूसरे को संपूर्णता की ओर ले जाने में है। स्त्री-पुरुष का यह संबंध केवल पति-पत्नी का ही नहीं बल्कि मित्र का भी हो सकता है।

"प्रकृति के ये दो मूल पक्ष अब आगे-पीछे नहीं, आमने-सामने खड़े हैं, ताकि साथ-साथ कदम मिला सकें। मात्र अनुकरण और नेतृत्व से नहीं, एक-दूसरे की बराबरी में। साँझेपन में।"[10]

ईशान और आरण्या के संबंधों में लेखिका ने 'सांध्य साथीपन' की अवधारणा को स्पष्ट किया है।

कृष्णा सोबती ने बड़ी ही तटस्थता के साथ बदल रहे समय की धड़कन को पहचाना है। पुरानी पीढ़ी की समस्याओं को सहानुभूति के साथ व्यक्त किया है, पर नई पीढ़ी की सिर्फ अंधाधुंध आलोचना ही नहीं की है। 'ओल्ड एज होमश नई पीढ़ी की नहीं बल्कि नए आर्थिक व्यवस्था की देन है। बाजारवाद ने हर संबंध को सुविधा की तराजू पर तौल दिया है। जनसंख्या के बढ़ते दबाव ने जगह की कमी कर दी है। ऐसे में नई पीढ़ी भी करे तो क्या-

"घर-परिवार में अधिकार कमतर होते चले जाते हैं। आशीर्वाद के लिए नमस्कार, प्रणाम एक संग परिवार में रहते जाने की गरमाहट का बोध और दबाव। बुढ़ापे की यही अवस्था और यही व्यवस्था, जगह की कमी। बच्चे भी गलत नहीं। दो तीन कमरों के घरों में दो पीढ़ियाँ किसी न किसी तरह एक-दूसरों को निभाती हैं।"[11]

जीवन के मुहाने पर खड़े ये दो बुजुर्ग अपने जीवन के बचे हुए समय की सरगम को बाकी चिंताओं से परे झटक पूरी उमंग के साथ सुनने को सजग हैं। साथ

ही पक चुकी उम्र को जीने की सतर्कता और दिनचर्या की वाजिब सावधानी को निहायत ही संजीदगी से बरतते हुए। "काजू से परहेज करना ही अच्छा है। इसमें हाई कोलेस्ट्रोल होता है।"[12]

"आसन-व्यायाम देह को सजग रखते हैं। उम्र के इस छोर पर पहुँचकर देह-संचारिणी सिकुड़ने लगती है।"[13]

ईशान और आरण्या जैसे बुजुर्ग परस्पर विरोधी विश्वास और निजी आस्थाओं के बावजूद साथ होने के लिए जिस पर्यावरण की रचना करते हैं, वहाँ न पारिवारिक या सामाजिक उदासीनता है और न किसी प्रकार का मानसिक उत्पीड़न। संयुक्त परिवार में बुजुर्गों की भूमिका और वर्तमान पारिवारिक माहौल में उनकी स्थिति बखूबी लेखिका ने अंकित की है। लेखिका का संदेश अदम्य जिजीविषा से भरपूर है। और जीवन की यह लालसा कर्मठता लिए हुए होनी चाहिए। इसलिए जो समय बचा है उसे अपनी सारी ताकत के साथ ही जीना होगा। अच्छे बूरे हर पलों को हमें समय में पिरोना होगा। जो वाजिब है उसे साथ लेकर चलना होगा और जिसे छोड़ना है, उसे छोड़ा ही जाए। हमें समय के साथ चलना होगा। तभी समय तरंगित हो सरगम बनेगा। हम जीवित हैं, यही समय की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

"समय सरगम
समय एक राग
नहीं समय में निबद्ध है अनेक राग
अनेक बंदिशें / समय बहाने-
बहाने सम्मोहित करता है।"[14]

संदर्भ

1. सोबती कृष्णा, 'समय सरगमश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002, पहला संस्करण : 2000, संशोधित संस्करण : 2001, पृष्ठ संख्या -- 64
2. वही, पृष्ठ संख्या -- 65
3. वही, पृष्ठ संख्या -- 74
4. वही, पृष्ठ संख्या -- 75
5. वही, पृष्ठ संख्या -- 77
6. वही, पृष्ठ संख्या -- 77
7. वही, पृष्ठ संख्या -- 50
8. वही, पृष्ठ संख्या -- 102
9. वही, पृष्ठ संख्या -- 100
10. वही, पृष्ठ संख्या -- 67

डॉ. राजेश शर्मा

पिता का नाम	: श्री रामेश्वर दत्त शर्मा
जन्म	: 30 जनवरी 1973, नोहर (राजस्थान)
शिक्षा	: एम.एस.सी. (गणित), एम.डी.एस विश्वविद्यालय, अजमेर एम.एड़, पी.एच.डी. (शिक्षा)
पद	: एसिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राजस्थान)
पता	: 46 न्यू अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर - 335001
मोबाईल नं.	: 9460119444

डॉ. नरेश कुमार सिहाग

जन्म तिथि	: 01 अगस्त 1978
संपादक	: बोहल शोध मंजूषा
शिक्षा	: एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिंदी, शिक्षा शास्त्र) एम. लिब. एम.फिल. (हिंदी, समाज शास्त्र), एल.एल.बी. (आनर्स), डिप्लोमा पंचायती राज (रजक पदक विजेता), प्रभाकर, सत्यार्थ शास्त्री, पत्रकारिता एवं जन संचार विशारद, शिक्षा विशारद, आयुर्वेद रत्न, धर्माधिकारी, विद्यावाचस्पति (वैदिक साहित्य, हिंदी साहित्य), विद्यावारिधि (मानद डी.लिट्)
साहित्य लेखन	: दसवीं कक्षा से लेखन कार्य प्रारंभ हंसती दुनियां, मधुर लोक, शांतिधर्मी, दैनिक ट्रिब्यून आदि पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित हो चुका है। सृजनात्मक लेखन, कविता, समकालीन कहानी और सामाजिक सरोकार से संबंधित विषयों पर शोध आलेख प्रकाशित।
प्रकाशित पुस्तकें	: पढ़ो, समझो-लिखो, कवि रोहतान सिंह भजनावली भाग-1 व 2, महर्षि दयानंद एक परिचय, साहित्य और अनुवाद प्रक्रिया, शास्त्र मंथन, पं. चंद्रभानु आर्य व्यक्तित्व और कृतित्व।
सम्प्रति	: सहायक आचार्य एवं शोध निदेशक, हिंदी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगा नगर, राजस्थान
संपर्क	: 8708822674

साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

www.sahityasanchay.com

e-mail : sahityasanchay@gmail.com

Mob. : 9871418244, 9136175560

₹ 300/-

ISBN : 978-93-88011-96-9